नानी-माँ की रज़ाई



नानी-माँ की रज़ाई





तान्या किचन की खिड़की के पास कुर्सी पर बैठी थी और वह व्याकुल थी. ज़ुकाम के कारण उसे कई दिन बिस्तर में रहना पड़ा था. लेकिन अब तान्या का ज़ुकाम लगभग ठीक हो चुका था. घर से बाहर जाकर, शीतल हवा और वसंत के आगमन का आनंद उठाने के लिए वह उतावली हो रही थी.

"माँ, मैं घर से बाहर कब जा सकती हूँ?" तान्या ने पूछा. माँ ने तंदूर से बिस्कुट की ट्रे निकाल कर काउंटर पर रखी.

"समय आने पर," माँ ने कहा. "उचित समय आने पर."

तान्या ने खिड़की के बाहर देखा. उसने अपने दोनों भाइयों, टैड और जिम, और पापा को पिछले अहाते को नया जंगला बनाते पाया.

"मैं नानी-माँ से बात करने जा रही हूँ," उसने कहा.

नानी-माँ अपनी मनपसंद जगह में बैठी थीं-जिस बड़ी खिड़की से बाहर का दृश्य दिखाई देता था, उसके सामने रखी नर्म आराम कुर्सी पर. उनकी गोद में कई प्रकार और रंगों के कपड़ों के टुकड़े पड़े थे. तान्या कुछ टुकड़ों को पहचान गई. चार-खानेदार कपड़ा उसके पापा की पुरानी कमीज़ का था, और लाल रंग के टुकड़े टैड की उस कमीज़ के थे जो उसने सर्दियों में पहनी थी.

"इस कूड़े करकट का आप क्या करेंगी?" तान्या ने पूछा.

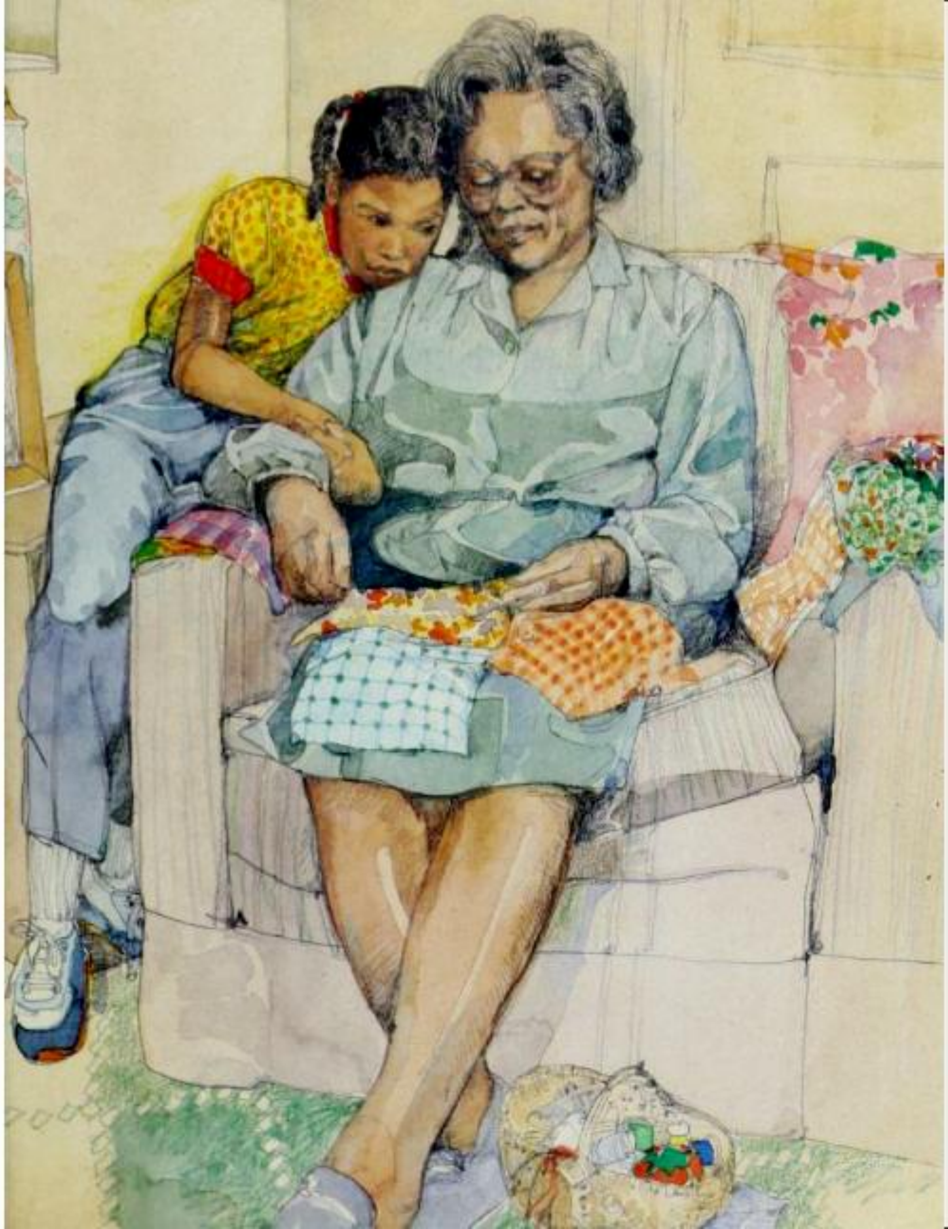
"कूड़ा करकट? यह कूड़ा करकट नहीं है. इन टुकड़ों से मैं एक रज़ाई बनाऊँगी. पैवंदकारी वाली रज़ाई."

तान्या ने अपना सिर थोड़ा झुकाया. "मैं जानती हूँ कि रज़ाई क्या होती है, नानी-माँ. आपके बिस्तर पर एक रज़ाई है, लेकिन वह पुरानी और मैली है और माँ उसे कभी साफ नहीं कर पाती."

नानी-माँ ने गहरी साँस ली. "वह मैली नहीं है, प्रिय. वह घिस गई है, जैसा कि उसे होना था."

नानी-माँ ने अपने हाथों की उंगलियों को बार-बार मोड़ा ताकि वह अकड़ न जायें, उन्होंने गहरी साँस ली और बोलीं, "जब मैं लगभग तुम्हारी आयु की ही थी तब मेरी माँ ने मेरे लिए एक रज़ाई बनाई थी. लेकिन कभी-कभी हम पुराने तौर-तरीके भूल जाते हैं."

तान्या आराम-कुर्सी पर झुक गई और अपना सिर नानी-माँ के कंधे पर रख दिया.



तभी दो गिलासों में दूध भरकर और कुछ बिस्कुट ले कर माँ वहाँ आई. हर ओर बिखरे कपड़ों के टुकड़ों को माँ ने देखा. “नानी-माँ, मैंने अभी-अभी यह कमरा साफ किया था और यह कचड़ा फिर इकट्ठा हो गया है.”

“यह कचड़ा नहीं है, माँ,” तान्या ने मुँह में बिस्कुट भरते हुए कहा. “यह रज़ाई है.”

“रज़ाई! आपको इन कतरनों की ज़रूरत नहीं है. मैं आपके लिए रज़ाई ले आऊँगी,” माँ ने कहा.

नानी-माँ ने अपनी बेटी को देखा फिर वह अपनी नातिन को देखने लगीं. “हाँ, तुम्हारी माँ किसी भी बड़ी दुकान से तुम्हारे लिए रज़ाई ला सकती है. लेकिन वह मेरी पैवंदकारी वाली रज़ाई जैसी न होगी और वह लंबे समय तक चलेगी भी नहीं.”

माँ ने नानी-माँ को देखा. फिर खाली गिलास लेकर, लंच बनाने के लिए, किचन में चली गई.





नानी-माँ सोच में पड़ गईं. अपनी दृष्टि तान्या से हटा कर, वह खिड़की से बाहर कहीं दूर देखने लगीं. अनमनेपन से वह कपड़े के टुकड़ों को उंगलियों से मसलने लगीं.

“नानी-माँ, रज़ाई बनाने में मैं आपकी सहायता करूँगी,” तान्या ने कहा.

“धन्यवाद, प्रिय,”

“अभी बनाना शुरु कर देते हैं. कुछ ही समय में हम इसे पूरा बना लेंगे.”

नानी-माँ ने तान्या को कसकर थाम लिया और उसके सिर को प्यार से थपथपाया. “इस रज़ाई को बनाने में बहुत समय लगेगा, कुछ दिन या सप्ताह नहीं-एक महीना भी नहीं. एक अच्छी रज़ाई-अति उत्तम रज़ाई......” मन में इस विचार के आने पर नानी-माँ की आँखें चमकने लगीं. “अरे, मुझे तो अभी और सामग्री चाहिए. सुनहरी और नीले रंग की, और थोड़ीसी लाल और हरे रंग की भी. और इसे अच्छे से बनाने के लिए मुझे समय चाहिए. इसे बनाने में कम से कम एक वर्ष लगेगा.”

“एक वर्ष,” तान्या चिल्लाई. “इतना समय! मैं इतनी देर तक प्रतीक्षा नहीं कर सकती, नानी-माँ”

नानी-माँ हँस पड़ी. “एक वर्ष बहुत लंबा समय नहीं होता, प्रिय. यह रज़ाई बनाने में बड़ा आनंद आएगा. अब भागो यहाँ से और अपनी नानी-माँ को आराम करने दो.” नानी-माँ ने धूप की ओर अपना सिर घुमाया और आँखें बंद कर लीं.

“मैं एक अति उत्तम रज़ाई बनाऊँगी,” नींद में जाने से पहले, कपड़े का एक टुकड़ा हाथ में जकड़ते हुए, वह धीमे से बड़बड़ाई.

“हमें नई पैंट लेनी पड़ेगी और पुरानी के टुकड़े किसी काम में लाने पड़ेंगे,” अगस्त की एक दुपहर में माँ ने धुला हुआ अंतिम कपड़ा सूखने के लिए तार पर लटकाते हुए कहा.

जिम दुःखी था. अपनी मन-पसंद कॉरडरॉय पैंट पर पैवंद लगा कर वह अब तक पहन रहा था लेकिन अब वह बिलकुल फट गई थी.

“अपनी पैंट यहाँ लाओ,” नानी-माँ ने कहा.

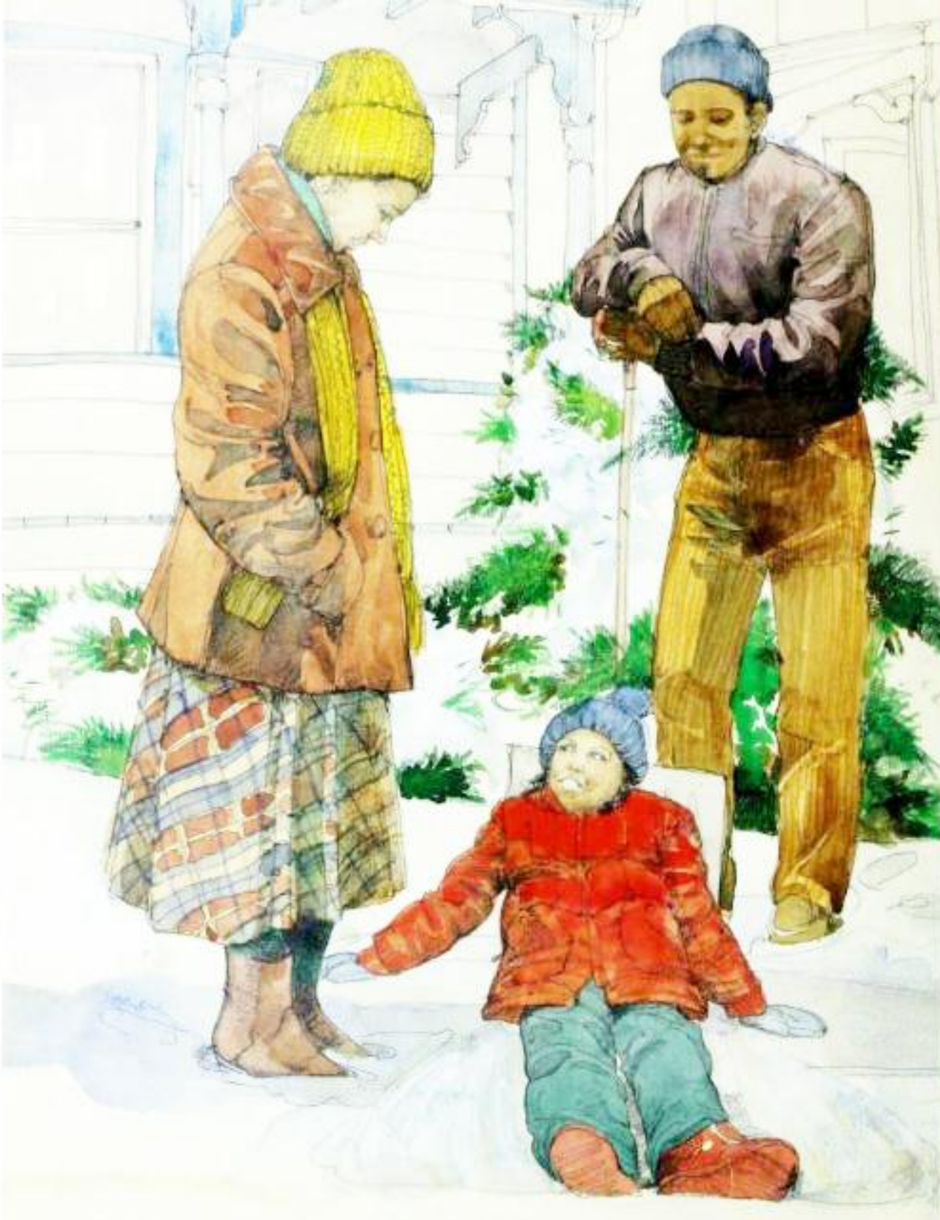
नानी-माँ ने पैंट से कुछ चकोर टुकड़े काट लिए. जिम उनके साथ लिपट गया और पैंट के टुकड़ों को अन्य टुकड़ों के साथ मिलाते हुए उन्हें देखता रहा.

“एक रज़ाई कभी भूलती नहीं. यह तुम्हारे जीवन की गाथा बता सकती है,” नानी-माँ ने कहा.



पतझड़ के आगमन का अर्थ था स्कूल और 31 अक्तूबर को मनाया जाने वाला दिवस, हैलोवीन. इस वर्ष तान्या एक अफ्रीकी राजकुमारी बनेगी. माँ ने रंग-बिरंगे कपड़े से जो लहराता चोगा बनाया था उसे पहन कर वह सारे घर में नाचती रहती थी. अटारी में रखे पुराने ट्रंक में जो बालियाँ और कंगन उसे मिले थे वह उसके चलने पर ज़ोर से झंकार करते थे. बचे हुए रंग-बिरंगे कपड़े से नानी-माँ ने कुछ टुकड़े काट कर तान्या को भी रज़ाई से जोड़ दिया.





दिन ठंडे हो गए लेकिन तान्या और उसके भाई को बुरा न लगा. वह जानते थे कि बर्फ गिरने में अब ज़्यादा देर न थी. माँ सर्दियों के आगमन से घबराती थी. हर वर्ष वह नानी-माँ से निवेदन करती कि वह हवादार खिड़की से दूर रहें पर नानी-माँ उस जगह से हिलती न थीं.

“नानी-माँ, प्लीज़,” माँ डांटती. “तुम यहाँ हीटर के पास बैठ सकती हो.”

“मैं तुम्हारी नानी-माँ नहीं हूँ. मैं तुम्हारी माँ हूँ,” नानी-माँ ने कहा. “और मैं यहीं सूर्य के प्रकाश में ही बैठूँगी और अपनी सबसे उत्तम रज़ाई बनाऊँगी.”

नवंबर के अंतिम दिन थे, जब टैड, जिम और तान्या की कामना पूरी हुई. वह एक सुबह उठे और देखा कि हर चीज़ बर्फ की परत से ढकी हुई थी. तान्या तैयार होकर भागती हुई सीढ़ियों से नीचे आई. टैड और जिम और यहाँ तक कि माँ और पापा भी पहले ही बाहर आ चुके थे.

“नानी-माँ को घर में छोड़ना मुझे अच्छा नहीं लगता,” माँ ने कहा. “मैं जानती हूँ कि वह अकेली हैं.”

तान्या सावधानी के साथ बर्फ से बाहर आई ताकि उसका बनाया हिममानव नष्ट न हो जाए. “नानी-माँ अकेली नहीं हैं,” तान्या ने प्रसन्नता से कहा. “वह और रज़ाई एक-दूसरे को कहानियाँ सुना रहे हैं.”

मां ने उत्सुकतापूर्वक तान्या को देखा, “एक-दूसरे को कहानियाँ सुना रहे हैं?”

“हाँ. नानी-माँ कहती हैं कि एक रज़ाई कभी भूलती नहीं है.”



परिवार ने सुबह और दुपहर का अधिकांश समय पहाड़ी से नीचे स्लैजिंग करने में बिताया. आखिरकार जब वह सब ठंड से ठिठुरने लगे तो गरमागरम चॉकलेट और सैंडविच खाने के लिए घर के भीतर आए.

“मैं जाकर नानी-माँ के पास बैठूँगी और उनसे बातें करूँगी,” माँ ने कहा.

“फिर वह आपको हमारी रज़ाई के बारे में समझा सकती हैं-हमारी अपनी परिवार की रज़ाई के बारे में,” तान्या ने कहा.

अपनी सबसे छोटे बच्ची की आँखों में माँ ने शरारत झलकती देखी.

“क्यों नहीं, नवयुवती, मैं शायद उनसे यही करने के लिए कहूँगी,” माँ ने किचन से जाते हुए कहा.

बैठक के भीतर देखने के लिए तान्या मेज़ के ऊपर झुक गई. नानी-माँ आगे झुकी हुई थीं, उनकी आँखें कपड़े के पास थीं और वह सिलाई कर रही थीं. माँ उनके पाँव के पास बैठ गई. तान्या उनकी बातें सुन न पाई, लेकिन वह जानती थी कि नानी-माँ रज़ाई के बारे में बात कर रही थीं और समझा रही थी कि यह रज़ाई क्यों सबसे विशेष थी. तान्या धीरे-धीरे चॉकलेट पीती रही, फिर उसने माँ को कपड़े का एक टुकड़ा उठाते, उँगलियों से उसे रगड़ते और मुस्कराते देखा.



उस दिन के बाद से दोनों औरतों ने सर्दियों की शामें एक साथ रज़ाई पर काम करते बिताईं. माँ कपड़ों को सिलतीं जबकि नानी-माँ कपड़े के टुकड़ों को काटती और उन्हें रंग-बिरंगे पैटर्न में सजातीं. दिन में क्रिसमस के लिए विशेष व्यंजन बनाते हुए भी वह रात में रज़ाई पर काम करती रहती थीं. सिर्फ एक बार माँ ने रज़ाई पर काम करना छोड़ा था. क्रिसमस की रात वह विशिष्ट पोशाक पहनना चाहती थी. इसलिए उसने कुछ सोने की बनी सामग्री खरीदी और अपने लिए एक सुंदर पहनावा बनाया. बिना पूछे ही तान्या जानती थी कि सोने की सामग्री के बचे हुए टुकड़े भी रज़ाई में जोड़ दिए जायेंगे.

उस क्रिसमस पर खूब गाना-बजाना और हँसी-मज़ाक हुआ. नानी-माँ के सारे बेटे और बेटियाँ, भतीजे और भतीजियाँ उनसे मिलने आए. क्रिसमस वृक्ष की लाइट्स खूब चमक रही थीं, जिनके रंगबिरंगे प्रकाश से कमरा दमक रहा था. बाद में जब सब लौट गए थे तो पापा ने कहा कि घर में इतनी खुशी उन्होंने आजतक महसूस न की थी. माँ उनकी बात से सहमत थी.



अगली सुबह जब तान्या नीचे आई तो उसने पापा को पैनकेक बनाते देखा.

“क्या आज कोई विशेष दिन है?” जिम ने पूछा.

“माँ कहाँ है?” तान्या ने पूछा.

“नानी-माँ आज कुछ अच्छा महसूस नहीं कर रही,” पापा ने कहा. “तुम्हारी माँ अभी उनके पास है और डाक्टर के आने तक उनके साथ रहेगी.”

“क्या नानी-माँ ठीक हो जायेंगी?” टैड ने पूछा.

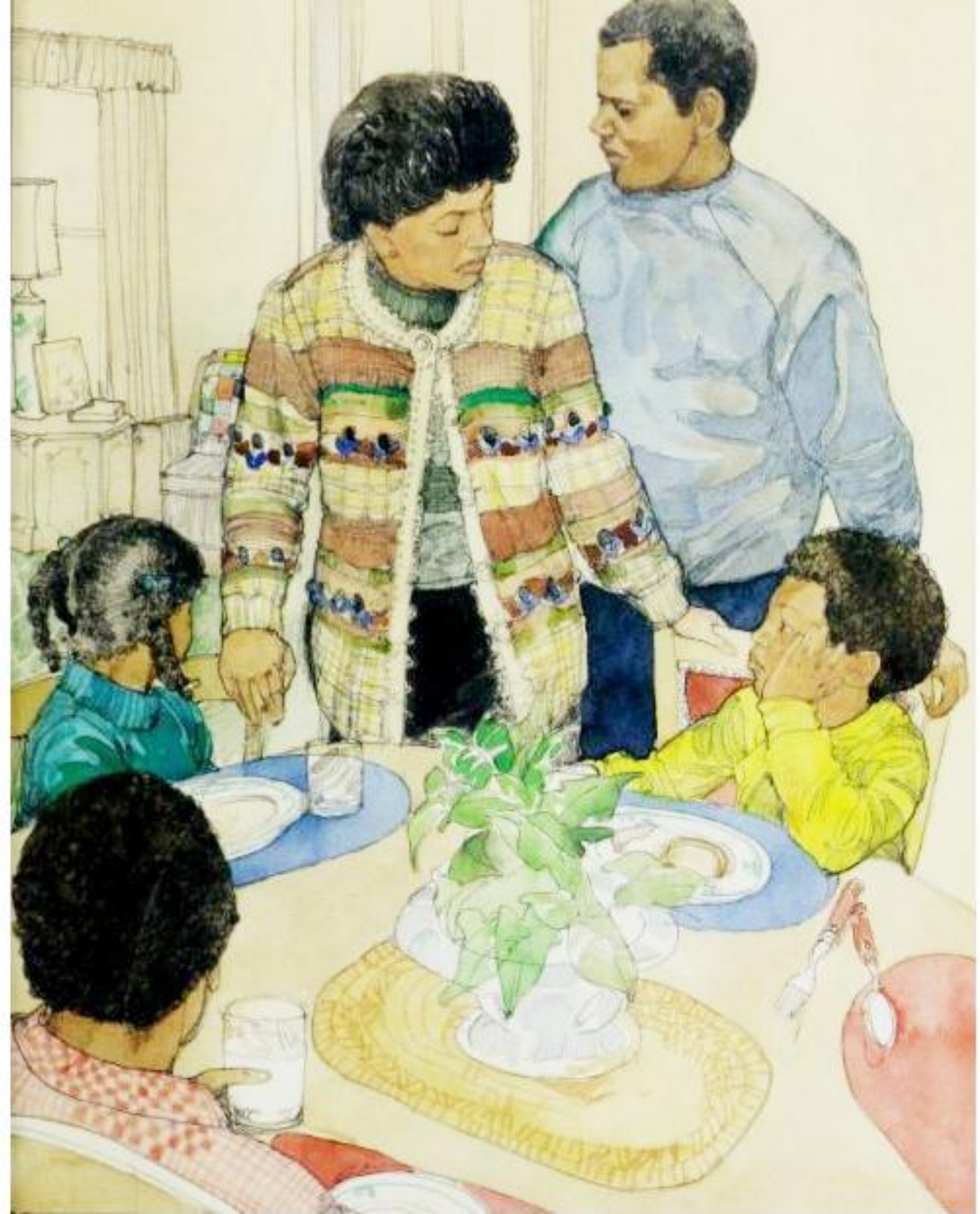
पापा ने बेटे के सिर पर हाथ रखते हुए कहा, “तुम्हें चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है. हम नानी-माँ का पूरा ध्यान रखेंगे.”

तान्या ने बैठक के भीतर देखा. वहाँ बड़ी आराम कुर्सी पर पैवंदकारी वाली रज़ाई पड़ी थी.

“अम्मा नहीं चाहती थी कि हमें पता चले कि वह अस्वस्थ थीं. उन्हें लगा कि तब हम प्रसन्नता से क्रिसमस न मना पायेंगे,” माँ ने बाद में हमें बताया. माँ का चेहरा थका हुआ और आँखें सूजी हुई थीं. “अब यह हम पर निर्भर करता है कि हम शांत रहें और यथासंभव उन्हें आराम करने दें.” पापा ने माँ के कंधे पर हाथ रख कर उनका साहस बढ़ाया.

“क्या हम नानी-माँ से मिल सकते हैं?” तान्या ने पूछा.

“नहीं, आज रात नहीं,” पापा ने कहा, “अभी नानी-माँ को बहुत आराम करना चाहिए.”



लगभग एक सप्ताह के बाद, नव-वर्ष से एक दिन पहले ही, बच्चों को नानी-माँ से मिलने दिया गया. वह बहुत कमज़ोर लग रही थीं और धीमे से बात कर रही थीं.

"नानी-माँ, हम आपको बहुत याद करते हैं," टैड ने कहा.

"और आपके मफिन और गर्म चॉकलेट को भी," जिम ने कहा. नानी-माँ मुसकराई.

"आपकी रज़ाई भी आपको याद करती है, नानी-माँ," तान्या ने कहा. नानी-माँ के चेहरे से मुस्कान गायब हो गई. उनकी आँखें नम हो गईं.

"मेरी सबसे उत्तम रज़ाई," नानी-माँ ने आह भरते हुए कहा. "वह बहुत सुंदर बनती. लगभग आधी बन चुकी है." उन्होंने अपनी आँखें बंद कर लीं और चेहरा दूसरी ओर घूमा लिया. पापा ने धीमे से कहा कि वहाँ से जाने का समय हो गया था. टैड, जिम और तान्या दबे पाँव बाहर चले गए.



तान्या धीरे से वहाँ आई जहाँ रज़ाई पड़ी थी. उसने माँ और नानी-माँ को उसे बनाते देखा था. उसने खूब सोचा. वह कपड़े के टुकड़े काटना जानती थी. लेकिन उसके बाद क्या करना था इसका उसे पक्का पता न था. तभी उसने अपने कंधे पर किसी के हाथ को महसूस किया. वह घूमी और देखा वह माँ थी.

"कल," माँ ने कहा.

नये वर्ष का पहला दिन शुरु हो रहा था. बर्तन साफ करने और रखने के बाद तान्या और माँ ने रज़ाई की जांच की.

"तुम कपड़ों के चकोर टुकड़े काटना और मैं उन टुकड़ों को सिल दूँगी," माँ ने कहा.

तान्या कपड़े की कतरनों से चकोर-चकोर टुकड़े तब तक काटती रही जब तक कि कैंची चला-चला कर उसके हाथ दर्द न करने लगे. माँ ध्यान से उसे देखती रही ताकि सब टुकड़े एक जैसे कटें. अगले दिन भी वह दोनों वही काम करते रहे. तान्या ने कई टुकड़े काटे और कतरे. लेकिन माँ हर समय तान्या के काम की निगरानी न रख सकती थी. नानी-माँ की देखभाल भी उसे करनी पड़ती थी. इसलिए तान्या अकेले ही काम करती थी. फिर एक रात जब पापा कहानियाँ पढ़ कर सुना रहे थे, जिम आया और रज़ाई को देखने लगा. रज़ाई में उसने नीले रंग के पैवंद देखे. उसकी पैंट के नीले पैवंद. बिना कुछ कहे जिम ने कैंची उठाई और कपड़े की कतरनों से चकोर टुकड़े काटने लगा. माँ उन टुकड़ों को जोड़ने का तरीका तान्या को सिखाने लगी



हर दिन स्कूल से घर आते ही तान्या रज़ाई पर काम करने लगती थी. टैड और जिम खेलों में बहुत व्यस्त रहते थे और माँ नानी-माँ की देखभाल करती थी. इसलिए तान्या रज़ाई पर अकेले ही काम करती थी. लेकिन कुछ सप्ताह के बाद उसने यह काम बंद कर दिया. कुछ गलत हो रहा था-किसी बात की कमी थी, तान्या को लगा. कई दिन तक वह रज़ाई आराम कुर्सी पर पड़ी रही. कोई नहीं जानता था कि तान्या ने उसे बनाना क्यों बंद कर दिया था. तान्या बैठी-बैठी बस उसे देखती रहती. आखिरकार उसे पता चल गया कि रज़ाई में किसी बात की कमी न थी. रज़ाई में किसी व्यक्ति की कमी थी.

उस दिन शाम के समय, सोने से पहले, तान्या एक कैंची लेकर दबे पाँव नानी-माँ के कमरे में गई. उसने, बिना शोर किये, नानी-माँ की पुरानी रज़ाई को एक कोने से पकड़ा और बड़े ध्यान से उस में से कुछ चकोर टुकड़े काट लिए.



फरवरी और मार्च आए और चले गए. माँ गर्व से अपनी बेटी को रज़ाई में पैवंदों की अंतिम पंक्तियाँ लगाते देखती. नानी-माँ भी उसे देखती रही थीं. समय बीतने के साथ नानी-माँ का स्वास्थ्य भी सुधर रहा था. जब वह कुर्सी पर बैठने योग्य हो गईं तो पापा उठा कर उन्हें खिड़की के पास रखी कुर्सी पर बैठा देते. "मुझे सूर्य के प्रकाश की आवश्यकता है," नानी-माँ ने कहा. फिर वह कुर्सी पर बैठ कर धीमे-धीमे गुनगुनाती रहती और तान्या को काम करते देखती रहती.

"हाँ, प्रिय, यह रज़ाई प्रसन्नता से भरी हुई है." नानी-माँ ने कहा.

गर्मियों की छुट्टियाँ शुरु होने ही वाली थीं. जून माह के एक दिन तान्या जब घर आई तो उसने नानी-माँ को दुबारा रज़ाई बनाते देखा! उन्होंने अंतिम चकोर पैवंदों को सिल दिया था, रज़ाई में भरी जाने वाली सामग्री ठीक से भर दी गई थी और अब वह पिछली तरफ का कपड़ा सिल रही थीं.

"नानी-माँ!" तान्या चिल्लाई.

नानी-माँ ने उसकी ओर देखा. "खामोश, बच्ची. रज़ाई का काम खत्म करने का समय आ गया है. लेकिन इसे उत्कृष्ट बनाने के लिए मुझे पहले कुछ विशेष कार्य करना है..."

अगली रात नानी-माँ ने अंतिम सिलाई कर धागे को दाँतों से काटा. "लो, यह पूरी बन गई," उन्होंने कहा. रज़ाई को पूरा फैलाने में माँ ने नानी-माँ की सहायता की.



किसी को अनुमान न था कि रज़ाई इतनी बड़ी या सुंदर बनेगी. लाल, हरे, नीले, और सुनहरी, हल्के और गहरे रंगों के पैवंद बहुत ही सुंदरता के साथ एक-दूसरे में घुलमिल गए थे.

“यह तो बहुत सुंदर है,” पापा ने कहा. उन्होंने सुनहरी रंग के पैवंद को छूआ और माँ की ओर देखा और उन्हें याद आ गया. जिम को भी याद आ गया. वहाँ उसकी पैंट का नीला पैवंद था और टैड की लाल कमीज़ का भी. तान्या की हैलोवीन पोशाक के टुकड़े भी लगे थे. और नानी-माँ के कपड़ों का एक टुकड़ा था. वह पुराना था, लेकिन वह भी घुलमिल गया था.



उन सब ने बीते वर्ष को याद किया. विशेषकर उन्होंने तान्या के परिश्रम को याद किया. इसलिए यह तय किया गया था. रज़ाई के दाहिने कोने की अंतिम पंक्ति में एक पैवंद बड़ी सुंदरता से सिला गया था जिस पर लिखा था, “प्रिय तान्या के लिए, उसकी माँ और नानी-माँ की ओर से.”

